Gq – व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला यूहन्ना ७:५३ से
८:११ तक | 1

– Save This Page as a PDF–

व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला

यूहन्ना ७:५३ से ८:११ तक

खुदाई: धार्मिक नेता व्यभिचारी महिला को येशुआ के पास क्यों लाए (लैव्यव्यवस्था २०:१० और व्यवस्थाविवरण २२:२२ देखें)? महिला के प्रति प्रभु का रवैया भीड़ के रवैये से किस प्रकार भिन्न था? आपको क्या लगता है कि वृद्ध लोग सबसे पहले घटनास्थल से क्यों चले गए? कहानी में आप किस समूह या व्यक्ति से पहचान रखते हैं? यीशु ने दोषी महिला के साथ जिस तरह व्यवहार किया उसका वर्णन करने के लिए आप किन शब्दों का प्रयोग करेंगे? उसने उसके पाप का समाधान कैसे किया? ईसा मसीह ने महिला से जो आखिरी बात कही, उसमें आपको क्या लगता है कि उनकी आवाज़ का स्वर क्या था और इसका क्या मतलब था?

चिंतन: इस पापी महिला के साथ येशुआ की बातचीत आपको कैसे प्रोत्साहित करती है? महिला के प्रति धर्मगुरुओं का रवैया क्या था? यीशु की ओर? हम इन्हीं मनोवृत्तियों से कैसे बच सकते हैं? यह अनुच्छेद पाप के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में क्या प्रकट करता है? आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि हम कुछ पापों को दूसरों की तुलना में कहीं अधिक बुरा मानते हैं? यह परिच्छेद कुछ पापों में फंसे लोगों के बारे में आपके दृष्टिकोण को कैसे चुनौती देता है? आपके जीवन में वे कौन लोग हैं जो आपको स्वीकार करते हैं चाहे आपने कुछ भी किया हो?

सुक्कोट के आखिरी दिन के संघर्षों के बाद, मसीहा जैतून के पहाड़ पर वापस चला गया। आम तौर पर यह उनका रिवाज था जब येरुशलायिम में रात के लिए लाजर, मार्था और मैरी के घर पर आतिथ्य की तलाश की जाती थी (युहन्ना ७:५३ से ८:१)। लेकिन इस अवसर पर अधिक संभावना है कि यीशु ने अपने दोस्तों के घर में आराम की तलाश करने के बजाय जैतून के पहाड़ पर बने एक अस्थायी बूथ में रहकर दावत की परंपरा का पालन किया।

अगला दिन बूथों के त्योहार का आठवां दिन था, जिसका उल्लेख टोरा में समापन विशेष सभा के रूप में किया गया है, जहां कोई नियमित कार्य नहीं किया जाना था (लैव्यव्यवस्था २३:३६, ३९; गिनती २९:३५)। यह वास्तव में एक अलग दावत का दिन माना जाता था। इसे रब्बीनिक हिब्रू में शेमिनी ‘अत्जेरेथ’ कहा जाता है, जिसका अर्थ है आठवें दिन की उत्सव सभा।

चार बड़े सुनहरे दीपस्टैंड जो दावत के दौरान हर शाम जलाए जाते थे, अभी भी महिलाओं के दरबार में थे (देखें एनसी२ – महिलाओं का दरबार)। वे पूरे वर्ष वहीं खड़े रहते

Gq – व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला यूहन्ना ७:५३ से
८:११ तक | 2

थे, भले ही उनका उपयोग केवल सुकोट और हनुक्का में ही किया जाता था। फिर भी, मंदिर में आने वाले आगंतुकों को केवल उनकी उपस्थिति से हर समय उनके विशेष महत्व की याद दिलायी जाती थी। यह वही स्थान था जहां शोएवा जुलूस पिछले दिन समाप्त हुआ था (देखें Gp– पर्व के अंतिम और महानतम दिन)। आठवें दिन भोर में यीशु फिर से स्त्रियों के आँगन में, उस स्थान के पास जहाँ प्रसाद इकट्ठा किया जाता था, प्रकट हुए, और उपदेश देने के लिए बैठ गए, क्योंकि सभी लोग उनके चारों ओर इकट्ठे हो गए थे (योचनान ८:२)। कुछ लोग सहमति में अपना सिर हिलाते हैं और आज्ञाकारिता में अपने दिल खोलते हैं। उन्होंने शिक्षक को अपने शिक्षक के रूप में स्वीकार कर लिया था और सीख रहे थे कि उन्हें अपने प्रभु के रूप में कैसे स्वीकार किया जाए। हम उस सुबह उनके विषय को नहीं जानते। प्रार्थना, शायद। या शायद दया या चिंता। लेकिन जो कुछ भी था, सीधे उनकी ओर आ रहे हंगामे के कारण यह जल्द ही बाधित हो गया।

एक छोटा, लेकिन दृढ़ निश्चयी समूह पूर्वी फाटक (देखें एनसी१ – पूर्वी फाटक और महिलाओं का दरबार) से होकर गुज़रा और शिक्षक की ओर बढ़ गया। श्रोता रास्ते से हटने के लिए छटपटाने लगे। भीड़ टोरा-शिक्षकों और फरीसियों से बनी थी, और इस क्रोधित लहर के शिखर पर अपना संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही एक महिला थी।

कुछ ही समय पहले वह एक ऐसे आदमी के साथ बिस्तर पर पकड़ी गई थी जो उसका पति नहीं था। यह कोई आकस्मिक खोज नहीं थी। यह एक जाल था। महिला के लिए जाल और यीशु के लिए जाल। टोरा-शिक्षकों और फरीसियों को पता था कि परेशानी पैदा करने वाला रब्बी सुबह वहीं होगा जहां वह हमेशा होता था – लोगों को पढ़ाना। न जाने उन्होंने इसके लिए कितने समय से योजना बनाई थी । अब जाल बिछाया गया। सुकोट के त्योहार के दौरान सभी इस्राएलियों को झोपड़ियों में रहना था (लैव्यव्यवस्था २३:४२)। रात में कोई भी महिलाओं के दरबार में आनंदमय पूजा सेवा में जा सकता था; हालाँकि, यह अनिवार्य नहीं था। लोग आराम करने या सोने के लिए भी अपने बूथों पर चले गये। ऐसा लगता है कि इस महिला को संबंध बनाने के लिए अपने पति के अलावा कोई और पुरुष मिल गया। या, अधिक संभावना है, उसने उसे ढूंढ लिया। टोरा-शिक्षकों और फरीसियों को अपनी दुष्ट योजना में पीड़ित होने के लिए किसी की आवश्यकता थी। खुद को छिपाने के लिए पर्याप्त समय नहीं होने पर, दो आदमी, जाहिर तौर पर फरीसी, उसे सड़क पर और भवन का पर्वत की ओर ले गए। वे व्यावहारिक रूप से उसे मिफकाड (या निरीक्षण) फाटक के माध्यम से, शूशन फाटक के माध्यम से, बाहरी आंगन के पार और पूर्वी फाटक के माध्यम से महिलाओं का दरबार में जितनी तेजी से जा सकते थे, ले गए। पवित्र कदमों के साथ वे मसीहा की ओर बढ़े और व्यावहारिक रूप से उसे उसकी दिशा में फेंक दिया। वह लड़खड़ा गई और लगभग गिर पड़ी।

वे व्यभिचार में पकड़ी गई एक महिला को लाए (यूहन्ना ८:३ए)। यह संक्षिप्त प्रकरण दर्शाता है कि येशुआ को सार्वजनिक रूप से फंसाने और बदनाम करने के लिए धार्मिक नेता किस हद तक जा सकते हैं। उन्होंने पहले ही उसके अधिकार को कमज़ोर करने का प्रयास किया था और उसे गिरफ्तार करने का प्रयास किया था। अब उन्होंने इस असभ्य

Gq – व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला यूहन्ना ७:५३ से
८:११ तक | 3

टकराव के साथ उनके विश्वासों का परीक्षण करना जारी रखा जिसमें एक महिला, जो स्पष्ट रूप से उनकी साजिश में फंसी हुई थी, को फैसले के लिए उनके सामने लाया गया था। उन्होंने जो मुद्दा चुना वह ऐसा था जहां दंड पर बहस नहीं हो सकती थी – व्यभिचार का मुद्दा।

टोरा-शिक्षकों और फरीसियों ने उसे उस समूह के
सामने खड़ा किया जिसे गुरु पढ़ा रहा था, और दंभ के साथ यीशु से कहा, “रब्बी, यह महिला व्यभिचार के कार्य में पकड़ी गई थी” (युहन्ना ८:३बी-४ सीजेबी)। वहां हर कोई जानता था कि इसका क्या मतलब है। तब नेता ने प्रसन्नतापूर्वक जाल फैलाया जब उसने यीशु से कुशलता से पूछा, उसके होठों से जहर टपक रहा था, “आप क्या कहते हैं?” किसी को भी, न तो वह समूह जिसे मसीहा पढ़ा रहे थे, न ही कोषेर राजा के विरोधियों, न ही उस महिला को उस उत्तर की उम्मीद थी जो उसने दिया था।

उसके अपराध के बारे में कोई संदेह नहीं था। यहूदियों के पास ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए एक अदालत थी, लेकिन चूंकि कभी-कभी रब्बी की राय पूछने की प्रथा थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि घात लगाने के लिए उन्होंने सब कुछ पूरी तरह से तैयार कर लिया है। उनका लक्ष्य येशु को अडोनाई का खंडन करने के लिए प्रेरित करना था। टोरा की ६१३ आज्ञाओं में से एक का उल्लंघन करने के लिए नाज़रीन से कुछ कहने का यह एक प्रयास था। प्रमुख फ़रीसी ने कहा: अब हमारे तौरात में, मूसा ने आदेश दिया कि ऐसी महिला को पत्थर मार-मार कर मार डाला जाए। ग्रीक जोरदार है: लेकिन आप, आप इसके बारे में क्या कहते हैं (यूहन्ना ८:५)? उन्होंने सोचा कि इस बार वह उनके पास है। शह और मात!

वे इस प्रश्न को एक जाल के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे, ताकि उस पर आरोप लगाने का आधार मिल सके (योचनान ८:६ए)। वे अपनी योजना में बहुत मेहनती थे। लेकिन यह तथ्य कि उनके इरादे बुरे थे, इस तथ्य से उजागर हो गया कि उन्होंने टोरा का पूरी तरह से पालन नहीं किया। रुआच हाकोडेश ने मानव लेखक मूसा को यह लिखने के लिए प्रेरित किया: यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की पत्नी के साथ, यानी किसी साथी देशवासी की पत्नी के साथ व्यभिचार करता है, तो व्यभिचारी और व्यभिचारिणी दोनों को मौत की सजा दी जानी चाहिए (लैव्यव्यवस्था २०:१०)।

Gq – व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला यूहन्ना ७:५३ से
८:११ तक | 4

परन्तु यीशु ने उत्तर देने से इन्कार कर दिया। वह बस नीचे झुका और अपनी उंगली से जमीन पर लिखना शुरू कर दिया (यूहन्ना ८:६बी)। यीशु वास्तव में क्या लिख रहे थे, इस पर बहुत बहस हुई है। लेकिन बाइबिल अधूरी नहीं है। पवित्र आत्मा हमसे कुछ भी नहीं रोकता है जिसे हमें जानने की आवश्यकता है। हम स्वर्ग में इसका पता लगा सकते हैं, लेकिन इस समय हमें यह जानने की ज़रूरत नहीं है कि उसने क्या लिखा है। यूनानी पाठ में उंगली पर जोर दिया गया है, लिखने पर नहीं। उंगली शब्द को हिब्रू वाक्य की शुरुआत में जोरदार स्थिति में रखा गया है। उंगली पर जोर क्यों दिया जाएगा (निर्गमन ३१:१८, ३२:१५-१६; व्यवस्थाविवरण ४:१३, ९:१०)?

परमेश्वर ने मूसा को जो ६१३ आज्ञाएँ दीं, उनमें से ६०३ मनुष्य की कलम से चर्मपत्र पर लिखी गई थीं। परमेश्वर की उंगली से पत्थर की पट्टियों में दस अंकित किये गये। इन आज्ञाओं में से एक ने व्यभिचार को प्रतिबंधित किया (मेरी टिप्पणी देखें निर्गमन Dq– आप व्यभिचार नहीं करेंगे)। येशुआ ने वह आज्ञा लिखी थी (यूहन्ना १:१) और व्यभिचार और पाप की सज़ा को अच्छी तरह से जानता था।

टोरा में स्पष्ट रूप से व्यभिचार के दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति के लिए मृत्युदंड की आवश्यकता थी। इसके अलावा, आज्ञाओं में यह भी आवश्यक था कि मुकदमे में गवाही देने वाले दुर्भावनापूर्ण गवाह नहीं हो सकते (व्यवस्थाविवरण १९:१६)। लेकिन यह तथ्य कि पुरुष को उसके साथ नहीं लाया गया था (इसमें दो टैंगो लगते हैं) से पता चलता है कि यह घटना महिला को पकड़ने के लिए रची गई थी और इस तरह पाखण्डी रब्बी को एक अनिश्चित दुविधा का सामना करना पड़ा – मूसा की आज्ञा का समर्थन करना (उसे फांसी देने का आह्वान करना), या रोमन ब्यबस्था का समर्थन करते हैं (जिसने यहूदियों को पत्थर मारकर मृत्युदंड देने पर रोक लगा दी है)। यीशु किस अधिकार का समर्थन करेंगे?

जब वे उससे पूछते रहे, तो वह सीधा हो गया और उनसे कहा, “तुम में से जो निष्पाप हो, वही सबसे पहले उस पर पत्थर फेंके। (यूहन्ना ८:७बी)।” टोरा ने उसे पत्थर मार-मार कर मार डालने का आह्वान किया। लेकिन टोरा को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने मांग की कि योग्य, या गैर-दुर्भावनापूर्ण गवाह फांसी की शुरुआत करें। यदि कोई दुर्भावनापूर्ण गवाह किसी पर अपराध का आरोप लगाने के लिए खड़ा होता है, तो विवाद में शामिल दो लोगों को उस समय पद पर मौजूद जाजकों और न्यायाधीशों के सामने परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा होना चाहिए। न्यायाधीशों को पूरी जांच करनी चाहिए, और यदि गवाह झूठा साबित होता है, जो किसी साथी इस्राएली के खिलाफ झूठी गवाही देता है, तो झूठे गवाह के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा गवाह दूसरे पक्ष के साथ करने का इरादा रखता है। कोई दया मत दिखाओ; प्राण की सन्ती प्राण, आंख की सन्ती आंख, दांत की सन्ती दांत, हाथ की सन्ती हाथ, और पांव की सन्ती पांव (व्यवस्थाविवरण १९:१६-१९, २१)।

लेकिन मूसा ने यह भी कहा कि वास्तव में, उन गवाहों को पहला पत्थर फेंकना होगा।

Gq – व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला यूहन्ना ७:५३ से
८:११ तक | 5

दूसरे शब्दों में, वे अभियुक्त के समान पाप के दोषी नहीं हो सकते। उस व्यक्ति को मौत की सज़ा देने में सबसे पहले गवाहों का हाथ होना चाहिए, उसके बाद सभी लोगों का। तुम्हें अपने बीच से बुराई को दूर करना होगा (व्यवस्थाविवरण १७:७)। जिसके साथ वह यौन संबंध बना रही थी, वह संभवतः उस पर आरोप लगाने वालों में से एक हो सकता है।

इसलिए, यीशु ने उनसे कहा: तुममें से जो निष्पाप हो, वह सबसे पहले उस पर पत्थर फेंके (यूहन्ना ८:७)। इस कविता को लगातार संदर्भ से बाहर किया जाता है। सबसे पहले, कई लोग कहते हैं, “आपको दूसरों का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए।” पाप में शामिल किसी विश्वासी का सामना करना और उसे बहिष्कृत करना किसी को “न्याय” करने से काफी अलग है क्योंकि इसमें विवेक और निर्णय शामिल है (देखें Gi– एक भाई या बहन जो आपके खिलाफ पाप करता है)। अंततः, मसीह ही न्यायाधीश है। पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सारा काम पुत्र को सौंप दिया है (योचनन ५:२२)। लेकिन हमें फल निरीक्षक कहा जाता है। उनके फल के द्वारा आप उन्हें पहचान लेंगे । . . हर अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है, परन्तु बुरा पेड़ बुरा फल लाता है (मत्ती ७:१६ए-१७)।

यीशु यह भी नहीं कह रहे हैं, “जब तक आप स्वयं पूर्ण नहीं हो जाते, आपको पहला पत्थर नहीं फेंकना चाहिए।” यदि उसने ऐसा कहा होता, तो उसने टोरा का खंडन किया होता। किसी अपराधी को फाँसी देने से पहले आरोप लगाने वालों की ओर से पाप रहित पूर्णता की आवश्यकता नहीं थी। हालाँकि, टोरा को कुछ पापों के लिए फाँसी की आवश्यकता थी, जिनमें से एक व्यभिचार था। इसलिए यदि यीशु कह रहे थे कि आरोप लगाने वालों को सिद्ध होना चाहिए, तो उन्होंने टोरा का खंडन किया होता और धार्मिक नेता यीशु को फंसाने में सफल हो गए होते। उनके पास उस पर आरोप लगाने का एक आधार रहा होगा और वे बिल्कुल यही करना चाह रहे थे।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन दो या तीन गवाहों की गवाही में उसे मौत की सजा दी गई थी, और जो पहला पत्थर फेंकने के लिए जिम्मेदार थे, उन्हें उसी पाप का दोषी नहीं होना चाहिए जिसका उन्होंने उस पर आरोप लगाया था। गल्प.

वह फिर झुका और भूमि पर लिखा (यूहन्ना ८:८)। किसी ने अपना गला साफ़ किया मानो बोलना चाहता हो, लेकिन कोई नहीं बोला। पैर उलट गये। वे एक-दूसरे की ओर नहीं देख सकते थे। निगाहें गंदगी पर टिक गईं। फिर गड़गड़ाहट. . . गड़गड़ाहट। . . गड़गड़ाहट। . . पत्थर ज़मीन पर गिरे.

इस पर सुनने वाले एक-एक कर दूर जाने लगे। वे आये तो एक थे, परन्तु एक-एक करके चले गये। सबसे पहले बड़े लोग, जब तक कि केवल यीशु ही नहीं बचे, महिला अभी भी वहीं खड़ी थी (योचनान ८:९)। कितना प्रभावशाली है। इन धार्मिक अधिकारियों ने टोरा से मसीहा को चुनौती दी थी। वह उनसे उन्हीं की धरती पर मिला, तब उसके लिखित वचन और

Gq – व्यभिचार के आरोप में पकड़ी गई महिला यूहन्ना ७:५३ से
८:११ तक | 6

बोले गए वचन ने उन्हें हरा दिया। अपनी अंतरात्मा से दोषी ठहराए जाने पर वे चले गए। यीशु सीधा हुआ और उससे पूछा: नारी, ऊपर देखो, वे कहाँ हैं? क्या किसी ने तुम्हारी निंदा नहीं की (यूहन्ना ८:१०)? शायद उसे उम्मीद थी कि वह उसे डांटेगा। शायद उसे उम्मीद थी कि वह निराश होकर चला जाएगा। मुझे यकीन नहीं है, लेकिन मैं यह जानता हूं: उसे जो मिला, उसने कभी सोचा भी नहीं होगा। उसे दया और कमीशन मिला।

“कोई नहीं, सर,” उसने कहा। करुणा थी: तब न तो मैं तुम्हारी निंदा करता हूं, यीशु ने घोषणा की। आयोग था: जाओ, और पाप न करो (योचनान ८:११ केजेवी)। पापियों का उद्धारकर्ता उसके पाप को क्षमा नहीं कर रहा था। वह कह रहे थे कि उन पर आरोप लगाने वालों को उनकी निंदा करने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है। फिर वह मुड़ी और गुमनामी में चली गई, फिर कभी नहीं सुना। लेकिन हम एक बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं। उस सुबह यरूशलेम में, उसने परमेश्वर के पुत्र को देखा, और उसने उसे देखा। वो आँखें । . . वह उन आँखों को कैसे भूल सकती है? साफ़ और आंसुओं से भरा हुआ। ऐसी आँखें जिन्होंने उसे वैसा नहीं देखा जैसा वह थी, बल्कि वैसा देखा जैसा वह होना चाहती थी।

फिर, येशुआ से टोरा के एक बिंदु का खंडन करवाने का यह उनका पहला प्रयास था, और यह बुरी तरह विफल रहा। उन्होंने इस चाल को दोबारा कभी नहीं आजमाया, बल्कि मसीहा पर लगातार मौखिक ब्यबस्था का उल्लंघन करने का आरोप लगाते रहे (देखें ईआई – मौखिक ब्यबस्था)।

एक अंतिम विचार। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जब मसीह ने टोरा का पालन किया, तो वह इसका पालन कर रहा था क्योंकि वह एक यहूदी था। टोरा अन्यजातियों को नहीं दिया गया था। लेकिन टोरा का पूरी तरह से पालन करने के बाद, उन्होंने हमारे विकल्प के रूप में भी इसका पालन किया, खासकर उन लोगों के लिए जो यहूदी विश्वासी हैं। जब प्रभु की मृत्यु हुई, तो वह टोरा का दंड सहते हुए मरे। जाहिर है, वह टोरा का उल्लंघन करने का दोषी नहीं था, इसलिए टोरा का दंड जिसके तहत उसकी मृत्यु हुई वह उसके अपने पाप के लिए नहीं था, बल्कि दूसरों के लिए एक विकल्प के रूप में था। हमारे उद्धारकर्ता की दंडात्मक, स्थानापन्न मृत्यु हुई। वह हमारा अंतिम रक्त बलिदान, हमारा विकल्प बनने में सक्षम था, क्योंकि उसने और उसने अकेले ही तोरा को पूरी तरह से बनाए रखा।

पिता, आप दयालु और क्षमाशील हैं। इस कहानी की महिला की तरह, हम आश्चर्यचकित हैं कि आप हम पर इतनी दया करेंगे। हम आपके बिना शर्त प्यार के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। हम वह नहीं हैं जो हमें होना चाहिए, लेकिन हम आपकी क्षमा स्वीकार करते हैं और आपके उद्धार का दावा करते हैं।